

डॉ. डोनाल्ड फाउलर, पुराने नियम की पृष्ठभूमि, व्याख्यान 15, लोग समूह, फिलिस्तीन और उगारिट, राजशाही का उदय

© 2024 डॉन फाउलर और टेड हिल्डेब्रांट

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 15 है, लोग समूह, फिलिस्तीन और उगारिट, राजशाही का उदय।

हमारे अगले टेप में आपका स्वागत है, जो सी पीपल्स मूवमेंट के बारे में चर्चा के कुछ स्तरों पर एक निरंतरता है। यह हास्यास्पद है क्योंकि दर्शकों में, मुझे आश्चर्य होगा यदि आप में से केवल एक बहुत ही छोटे प्रतिशत के अलावा किसी ने भी सी पीपल्स मूवमेंट के बारे में सुना है, और फिर भी वहां मौजूद लगभग सभी लोगों ने पलिशतियों के बारे में सुना है। ठीक है, जिस अर्थ में हमने पलिशतियों के बारे में सुना है, उस अर्थ में पलिशती आंदोलन से अधिक महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे इस आंदोलन में शामिल लोगों का एक छोटा, छोटा, असीम रूप से छोटा सा हिस्सा थे।

लेकिन वे बाइबिल के सभी लोगों में से सबसे प्रसिद्ध हैं, और विशेष रूप से डेलिलाह के कारण। इसलिए, हम उन्हें देख सकते हैं और फिर भी उनसे और अधिक सीख सकते हैं, इसलिए हम उस बारे में बात करना चाहेंगे जिसे मैं निर्गमन के बाद के पलिशतियों के रूप में कहता हूं। और ये पलायन के बाद के पलिशती तजेकर और दनुना इत्यादि से निकटता से जुड़े हुए हैं।

जाहिरा तौर पर, पुराने नियम में फिलिस्तीन शब्द का प्रयोग उदारतापूर्वक किया गया है। इब्रियों के लिए जनजातियों को एक-दूसरे से अलग बताना कठिन रहा होगा क्योंकि वे एजियन्स के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, इसलिए उन्होंने शायद इनमें से सबसे शक्तिशाली लोगों के समूहों या उन लोगों का नाम लिया जो उनके सबसे करीब थे। इब्री वहाँ थे, और उन सभी का वर्णन करने के लिए उस नाम का उपयोग किया। इसलिए, जब हम आगे बढ़ने के लिए तैयार हो रहे हैं तो हम आपसे यह कहना चाहेंगे कि जब मिस्रियों ने उन्हें हराया, तो उन्होंने इज़राइल के कई क्षेत्रों में कई अलग-अलग जनजातियों को बसाया, और इसलिए ये पलायन के बाद के पलिशती इस क्षेत्र में अचानक नहीं आए। जैसा कि उन्होंने धीरे-धीरे किया।

पेलेसेट पेंटोपोलिस में बसे थे, पाँच शहर जिनका बाइबिल में उल्लेख किया गया है, गाजा, गाथ, अश्कलोन, अशदोद और एक्रोन। तो ये हैं वो पाँच शहर। ये अपने आप में फिलिस्ती शहर नहीं थे, मिस्रियों ने इन्हें यहीं बसाया था।

और मिस्रियों ने उन्हें बसाया क्योंकि वे मिस्रियों के जागीरदार थे, और उन्हें यहाँ रखकर, यह क्षेत्र, मिस्रियों के लिए बहुत संवेदनशील था, ठीक है? इसलिए, यदि मैं एक या दो वाक्यों से विषयांतर कर सकूँ, तो आपको हक्सोस याद आ जाएगा। हक्सोस ने मिस्र के विचार पर कभी न खत्म होने वाला प्रभाव डाला। तो, मिस्रवासियों ने हक्सोस से जो सीखा वह यह है कि इस रेगिस्तानी क्षेत्र के मिस्र को मध्य पूर्व से अलग करने के बावजूद, मिस्रवासी सुरक्षित नहीं थे।

यहां लगभग 250 मील का रेगिस्तानी क्षेत्र है। मिस्रवासियों ने सोचा कि बस इतना ही काफी है। लेकिन हक्सोस के परिणामस्वरूप, उन्हें पता चला कि यदि वे इस भूमि पुल को नियंत्रित नहीं कर सके तो वे असुरक्षित थे। इसलिए, भूमि पुल पर कब्जा करने की कोशिश करने के लिए, उन्होंने पलिशियों को, जो उनके जागीरदार थे, पकड़ लिया, और उन्होंने उन्हें यहीं बसा दिया, जहाँ उन्होंने उन्हें पाँच शहरों में बसाया, और फिर उन्होंने मिस्र के मार्गों की रक्षा की।

जब तक उन पाँच शहरों में ये शक्तिशाली एजियन योद्धा थे, तब तक उन पर आसानी से आक्रमण नहीं किया जा सकता था। फिर उन्होंने उन्हें यहां गलील झील के दक्षिण में भी रखा। उन्होंने उन्हें यहां रखा क्योंकि वे जॉर्डन रिफ्ट की रक्षा कर रहे थे, जो रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था।

फिर उन्होंने उन्हें यहीं अम्मान में रख दिया क्योंकि वह शहर इस क्षेत्र के पूरे पूर्वी हिस्से को नियंत्रित करता था। तो, एजियन्स की इन रणनीतिक बस्तियों के साथ, वे मूल रूप से मिस्र को इन नफरत करने वाले सेमाइट्स से बचाने के लिए एक शक्तिशाली गढ़ बना रहे थे। इसलिए उन्होंने उन्हें वहीं बसा दिया जहां वे थे।

इसलिए, वे कई क्षेत्रों में बसे हुए थे। लेकिन 10वीं शताब्दी तक, वे मेरे द्वारा बताए गए क्षेत्रों से कहीं अधिक क्षेत्रों में फैल गए थे। इसलिए सांस्कृतिक रूप से, पलिश्टी इस क्षेत्र के लिए स्पष्ट रूप से अद्वितीय हैं।

वे एजियन हैं, और आप उनके मिट्टी के बर्तनों को देखकर बता सकते हैं। ठीक है, यदि आप जानते हैं कि सेमेटिक मिट्टी के बर्तन कैसे दिखेंगे, तो आप बता सकते हैं। यह आम तौर पर एजियन मिट्टी के बर्तन हैं जो मेरे पास आपके लिए हैं। इसकी कलाकृति और भव्यता सेमेटिक दुनिया की किसी भी चीज़ से कहीं बेहतर है।

एजियन उपस्थिति के इस प्रारंभिक चरण में भी, इस मामले का तथ्य यह है कि एजियन की मिट्टी के बर्तन सेमेटिक दुनिया द्वारा उत्पादित किसी भी चीज़ से बेहतर थे। इसलिए, उन्होंने बहुत विशिष्ट मिट्टी के बर्तन बनाए। उनके पास विशिष्ट दफन पैटर्न थे।

ये आवश्यक रूप से फ़िलिस्ती नहीं हैं क्योंकि हम जानते हैं कि बाद की तारीख में, मिस्रवासी उसी प्रकार के दफन ताबूतों का उपयोग करते थे, लेकिन हम इन्हें मानवाकार मिट्टी के ताबूत कहते हैं क्योंकि वे मनुष्यों के आकार के हैं, और वे मिट्टी से बने हैं, और लोगों को इसमें दफनाया गया था उन्हें। और यह बताना थोड़ा कठिन है, लेकिन हो सकता है कि आपकी नज़र इस पर पड़ जाए। यहां सिर है और निश्चित रूप से, कान हैं, लेकिन फिर यहां ठोड़ी है, और फिर ठोड़ी के नीचे, आप दो भुजाएं देख सकते हैं, जो शरीर के अनुपात में नहीं हैं, लेकिन इस तरह से इन मिट्टी के ताबूतों को आकार दिया गया था।

यह मुझे माइसेनियन राजाओं के मौत के मुखौटे की अस्पष्ट याद दिलाता है। निश्चित रूप से समान नहीं है, लेकिन यह मुझे इन माइसेनियन राजा मौत के मुखौटों की याद दिलाता है। तो, किसी भी कीमत पर, ये इनमें से कुछ पलिशियों के दफन ताबूत थे।

हम जानते हैं कि प्रारंभ में, उन्होंने क्षेत्र के धार्मिक देवताओं, देवताओं और प्रथाओं को आत्मसात कर लिया था। वे बहुत पहले ही यहूदी बन गये थे। तो बाइबल में पलिशियों का इतना बड़ा नाम क्यों है? खैर, बाइबल में उनका बहुत महत्व है क्योंकि वे बहुत शक्तिशाली योद्धा हैं।

उनके पास विजयी हथियार था। 1 शमूएल 13, 19 से हम जो जानते हैं वह यह है कि पलिशियों का क्षेत्र में लोहे पर एकाधिकार था। ऐसा नहीं है कि प्राचीन विश्व को लोहा खोजने में बहुत समय लग गया।

जहाँ तक आप जा सकते हैं, प्राचीन लोग लोहे के बारे में जानते थे। यह अनोखा था। यह भारी था और इसके साथ काम करना बहुत कठिन था।

जहां हम आज हैं, उससे कुछ समय पहले तक, जो शायद 1500 ईसा पूर्व या उससे भी पहले था, मनुष्य ने अंततः यह नहीं सीखा कि लोहे को कैसे पिघलाया जाए। लोहे को साधारण आग के तापमान से नहीं पिघलाया जा सकता। यदि मैं लोहे के धातु के टुकड़े के नीचे आग जलाने की कोशिश करूँ, तो यह उसे गर्म करने के अलावा कुछ नहीं करेगी।

वे लोहे को पिघला नहीं सकते थे। मानव इतिहास में कहीं न कहीं, उन्होंने यह रहस्य सीखा, और उन्होंने इसे धौंकनी प्रणाली के माध्यम से किया जिसे हम जानते हैं। प्रारंभिक अमेरिकी इतिहास में, ये लोहार, लोहे के लोहार, जो घोड़े की नाल और उस जैसी चीज़ों के साथ काम करते थे, एक अर्कोर्डियन जैसी संरचना द्वारा लोहे को पिघलाने में सक्षम थे जो धातु में वायु प्रवाह को बढ़ा देता था।

जितनी अधिक हवा होगी, लौ उतनी ही गर्म हो सकती है। किसी समय, एजियन सर्कल के लोगों ने लोहे को पिघलाना सीख लिया था। बेशक, अगर आप इसे पिघला दें, तो आप वही कर सकते हैं जो इंसानों ने किया है।

हम आश्चर्य हो सकते हैं, निश्चित रूप से ऐसा करना जारी रखेंगे; हम उन्हें लोगों को मारने वाली एजेंसियां बना देंगे। तो, यह प्राचीन काल में था। इससे पहले कि वे लोहे को मिट्टी के बर्तन और औज़ार जैसी व्यावहारिक चीज़ों में बदलते, उन्होंने उसे हथियारों में बदल दिया।

और इसलिए, पलिशियों के पास लोहा था, और युद्ध में लोहे के हथियारों ने उन्हें अपराजेय लाभ दिया। वास्तव में, बाइबल कनानियों और उनके लोहे के रथों के बारे में बात करती है। खैर, इज़राइल के 500 मील के दायरे में कोई लोहा नहीं है।

इसलिए, सारा लोहा आयात करना पड़ा, और निश्चित रूप से, कनानियों को लोहे को गलाने के बारे में कुछ भी नहीं पता था। तो, इस क्षेत्र में जो लोहा था वह व्यापार या खरीद के माध्यम से इस क्षेत्र में लाया गया था, और पलिशियों के पास वह तकनीक थी, और इसने उन्हें विजयी शक्ति बना दिया क्योंकि उनके पास लोहे की तलवारें हो सकती थीं। इसलिए पलिशती उन सबसे दुर्जेय लोगों में से थे जिनसे इस्राएलियों को निपटना था, और उनका प्रभाव इतना महान था कि उनका अंत उनके द्वारा इसे थोपने से नहीं, बल्कि रोमनों द्वारा उस नाम को अपनाने से हुआ जिसे उन्होंने क्षेत्र फिलिस्तीन कहा।

वे बाइबिल के समय के सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से हैं, और निश्चित रूप से, हम एक ही समय में पलिश्टी महिलाओं के साथ सैमसन के भागने के बारे में कुछ हद तक दुखी होकर हंसते हैं। इसलिए, उनका इब्रियों पर अन्य तरीकों से भी प्रभाव पड़ा। मुझे लगता है कि बाइबिल के पाठ में आने से पहले हम अपना ध्यान उन अंतिम स्थानों और लोगों पर केंद्रित करने जा रहे हैं जिनसे हम निपटना चाहते हैं।

इस व्याख्यान में हम बाद में यहीं जा रहे हैं, और यही उगारिट की साइट है। एक बार फिर, मेरे अधिकांश मानचित्र गायब हो गए हैं, इसलिए मैं आपको सटीक रूप से नहीं दिखा सकता कि उगारिट कहां है, लेकिन मैं इसे इस क्षेत्र में इस तरह से मानचित्र पर इंगित कर सकता हूं जहां मेरा कर्सर इंगित किया गया है। हमारे पास उगारिट का प्राचीन शहर है। और उगारिट एक ऐसा शहर था जिसके बारे में हम वास्तव में कुछ भी नहीं जानते थे जब तक कि यह गलती से नहीं मिल गया।

लगभग एक सदी पहले, एक स्थानीय व्यक्ति जुताई कर रहा था, और उसके हल की नोक से एक कलाकृति निकली और वह उगारिट स्थल की एक कलाकृति निकली। और इसलिए हम यहां लगभग दो पीढ़ियों के बाद हैं, और हम अभी भी उगारिट में खुदाई कर रहे हैं। प्रमुख उत्खननकर्ता क्लाउड शेफ़र नाम का एक फ्रांसीसी पुजारी था।

और जब आप साइट देखते हैं, तो एक चीज़ जो आपको चौंकाती है वह यह है कि यह एक आदर्श व्यापारिक स्थान है। जैसा कि आप देख सकते हैं कि यह यहाँ कहाँ है, यहाँ साइप्रस है। आप बस थोड़ा सा विस्तार देख सकते हैं, साइप्रस का सबसे पूर्वी विस्तार।

निःसंदेह, साइप्रस वह स्थान था जहां से पूर्वजों को अधिकांश तांबा प्राप्त होता था। तो, उगारिट साइप्रस से ठीक समुद्र के उस पार है। यहां तक मुख्य व्यापार मार्ग अरपाद और अलेप्पो इत्यादि हैं।

निस्संदेह, यह व्यापार के लिए उत्तर-दक्षिण यातायात पर भी प्रतिबंध लगाता है। तो, दूसरे शब्दों में, यह पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण व्यापार मार्गों के केंद्र में स्थित है, जो इसे आदर्श व्यापारिक केंद्र बनाता है। इस प्रकार, यह अपने पूरे इतिहास में तब तक था जब तक कि यह सी पीपुल्स मूवमेंट में नष्ट नहीं हो गया। इसलिए, यह साइट व्यापार के लिए आदर्श है।

जब यह साइट मिली, तो इसकी भाषा और साहित्य बाइबिल के अध्ययन के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। इसका कारण, खैर, वास्तव में कई कारण हैं, और हम उनके बारे में बात करेंगे। आप देखेंगे कि उगारिट के बारे में मैं जो बताने जा रहा हूँ उससे कहीं अधिक जानकारी मेरे पास है।

लेकिन जो मैं आपको बताना चाहता था वह यह है कि उगारिट, भले ही आपने यह शब्द कभी न सुना हो, उगारिट अपने आप में एक अनुशासन है। ऐसे पुरुष और महिलाएं हैं जो अपना पूरा जीवन उगारिटिक अध्ययन में बिताते हैं। उगारिट एक अनुशासन है जिसमें इसकी अपनी भाषा, अपना व्याकरण, अपनी शब्दावली, अपनी ग्रंथ सूची है।

यह अपने आप में एक अनुशासन है, इसलिए यह अच्छी तरह से विकसित है। उगारिट के बारे में सबसे दिलचस्प चीजों में से एक यह है कि यह अब तक पाई गई सबसे प्रारंभिक वर्णमाला भाषाओं में से एक है।

अब, हम सोचते थे कि उगारिट एक समय में अब तक पाई गई सबसे प्रारंभिक वर्णमाला भाषा थी। अब हम जानते हैं कि यह सच नहीं है। वास्तव में, वे वर्णमाला पर तारीख को और पीछे धकेलते रहते हैं, और मुझे लगता है कि हम अब तक लगभग 1700 या 1800 की तारीख तक पहुँच चुके हैं जब सबसे प्रारंभिक वर्णमाला का आविष्कार हुआ था।

लेकिन निश्चित रूप से, उगारिट हमें कई टैबलेट प्रदान करता है, जबकि इनमें से कोई भी अन्य प्रस्तावित वर्णमाला हमें कोई टैबलेट प्रदान नहीं करता है। तो, यह एक सेमिटिक भाषा है जो हिब्रू से बहुत निकटता से संबंधित है। इसकी वर्णमाला में कीलाकार लिपि में लिखे गए 30 व्यंजन शामिल थे।

यदि आप एक सामान्य व्यक्ति के रूप में एक अक्कादियन लिपि को देख रहे थे, यदि आप एक टैबलेट को देख रहे थे जो क्यूनिफॉर्म में था, तो यह सुमेरियन, अक्कादियन, उगारिटिक या हिती में लिखा जा सकता था, और आप अंतर नहीं बता सकते थे। यह सब एक जैसा ही दिखेगा। लेकिन उगारिट एक ऐसी भाषा है जो हिब्रू से बहुत करीब से जुड़ी हुई है, और निस्संदेह, यह उन चीजों में से एक है जो इसे हिब्रू के लिए इतनी महत्वपूर्ण भाषा बनाती है।

इसलिए, हम अपनी टिप्पणियों को केवल कुछ चीजों तक ही सीमित रखेंगे, लेकिन यह आपके लिए इंगित करने योग्य है। मुझे लगता है कि एक छात्र के रूप में मैंने अपने वर्षों में जितनी भी भाषाएँ पढ़ीं, उनमें से हिब्रू के अलावा मुझे यह कहना होगा कि उगारिटिक मेरी अगली पसंदीदा भाषा थी। इसलिए, जबकि उगारिट पश्चिम में एकमात्र स्थान नहीं है जहाँ गोलियाँ पाई गई हैं, यह एकमात्र स्थान है जहाँ इब्ला को छोड़कर कोई महत्वपूर्ण मात्रा में गोलियाँ हैं।

इसके अलावा, यह दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में किसी भी परिणाम की एकमात्र टैबलेट खोज है, उगारिट को लगभग 1200 में नष्ट कर दिया गया था। इसे कभी भी पुनः प्राप्त नहीं किया गया था, लेकिन इसने हमें सैकड़ों गोलियाँ छोड़ दीं जो आज हमारे लिए पूरी तरह से अमूल्य हैं। शायद इस खोज का सबसे सुखद परिणाम हिब्रू भाषा अध्ययन, विशेषकर हिब्रू कविता के लिए इसका महत्व होगा।

पुराने नियम के वाक्य-विन्यास, हिब्रू व्याकरण और हैपैक्स लेगोमेना के अध्ययन के लिए इसका अत्यधिक महत्व है। हैपैक्स लेगोमेना का शाब्दिक अर्थ है एक बार लिखा हुआ। इसलिए, जब हम हिब्रू जैसी भाषा के साथ काम कर रहे होते हैं, तो कभी-कभी हमारे पास ऐसे शब्द होते हैं जो केवल एक बार आते हैं, और हम बस अनिश्चित होते हैं कि उस शब्द का क्या अर्थ है।

इसलिए, जब हम उगारिट को देखते हैं, तो पहली चीज़ जो मैं आपकी सोच में डालना चाहूंगा वह यह है कि यह एक ऐसी भाषा है जिसका हिब्रू बाइबिल पर अद्भुत प्रभाव पड़ा है। जब मैं अपने

शुरुआती वर्षों में एक छात्र था, तो मैं भजन संहिता में बहुत काम करता था। और मुझे याद है कि मैं जाकर भजनों पर टिप्पणियाँ देख रहा था जो 30 और 40 के दशक में की गई थीं।

और वस्तुतः, टिप्पणीकार जो करेंगे वह हिब्रू बाइबिल को पुनर्व्यवस्थित करना, उसे ग्रीक काव्य संरचनाओं के अनुरूप बनाने के लिए बदलना होगा। दूसरे शब्दों में, उनमें से कुछ शुरुआती टिप्पणियाँ लिखी गईं, और टिप्पणीकार ने सोचा कि हिब्रू भ्रष्ट थी। और इसलिए, वे इसे ग्रीक साहित्यिक संरचनाओं के अनुरूप बनाने का प्रयास करेंगे।

खैर, अब हम जो जानते हैं, वह यह है कि यह बाल्डरडैश था। और वास्तव में, आज हमारे पास जो हिब्रू कविता है वह उगारिट के काव्य गद्य की संरचना के साथ बहुत सहजता से फिट बैठती है। उगारिट में भजन नहीं हैं, लेकिन इसमें काव्यात्मक गद्य है जो इतनी अच्छी तरह से फिट बैठता है कि इसने हिब्रू कविता के अध्ययन के लिए एक सुखद स्थिति ला दी है।

अब, विद्वान हिब्रू पाठ को बदलने में अपना समय बर्बाद नहीं करते हैं, बल्कि उगारिट के प्रभाव के कारण बड़े पैमाने पर हिब्रू पाठ को स्वीकार करने लगे हैं। जब मैं छोटा था, तो एक महान कैथोलिक विद्वान, मिशेल डाहुड ने एंकर बाइबिल में भजनों पर तीन खंडों में एक टिप्पणी लिखी थी और मूल रूप से हिब्रू पाठ के प्रति एक बहुत ही रूढ़िवादी रुख अपनाया था कि वह हिब्रू पाठ के व्यंजनों को नहीं बदलेंगे। अब, उसने स्वर तो बदले लेकिन व्यंजन नहीं।

ऐसी चीजें उगारिट के कारण हुईं, और इसलिए इससे हमें विशेष रूप से हिब्रू कविता, बल्कि हिब्रू व्याकरण और वाक्यविन्यास को समझने में भी मदद मिली है। इसने हमें उन अजीब और दुर्लभ शब्दों को समझने में मदद की है जिनके साथ हम नहीं जानते कि क्या करना है। मुझे याद है जब मैं मसीह में नया धर्मांतरित हुआ था, मुझे याद है कि किसी कारण से, यह सिर्फ भगवान की संप्रभुता रही होगी।

मैं बस पुराने नियम की ओर आकर्षित हुआ था। मुझे शुरू से ही यह बहुत पसंद आया। लेकिन यदि आप पुराने नियम को पढ़ते हैं, विशेष रूप से पहली बार जब आप इसे पढ़ रहे हैं, तो आपके पास बहुत सारे प्रश्न हैं।

मैं याद कर सकता हूँ क्योंकि उस समय, हमने किंग जेम्स को पढ़ा था - लगभग हम सभी ने पढ़ा था - और मुझे भविष्यवक्ताओं को पढ़ना याद है, और वे भविष्यवाणी के प्रभाव के तहत पेड़ों को काटने के बारे में बात कर रहे थे। हेविंग एक ऐसा शब्द है जिसका हम अब उतना उपयोग नहीं करते। इसका मतलब है कटौती करना।

और उन्होंने पेड़ों को काटने के बारे में बात की जैसे कि आप इन पेड़ों को काटकर किसी तरह कनानी धर्म पर हमला कर रहे थे। और मुझे याद है कि मैं एक नवयुवक के रूप में इतना हैरान था कि पेड़ कैसे पापी हो सकते हैं और वे उन्हें क्यों काट रहे हैं? खैर, निःसंदेह, अब हम जानते हैं कि ये बिल्कुल भी उपवन नहीं हैं। वे वास्तव में अशेरा नामक महिला देवता की लकड़ी की छवियाँ हैं।

लेकिन देखिये, हम जानते हैं कि, बड़े पैमाने पर किंग जेम्स अनुवादकों उगारिट के प्रभाव में, वे सिर्फ अनुमान लगा रहे थे। उनके पास एक शब्द था जिसका मतलब काटना था। ठीक है, यदि आप चीजें काट रहे हैं, तो वे पेड़ ही होंगे।

लेकिन उगारिट जैसी साइटों के लिए धन्यवाद, अब हम जानते हैं कि वे लकड़ी की सांस्कृतिक छवियों को काट रहे थे। इसलिए, उगारिट ने हमारी हिब्रू बाइबिल को समझने में हमारी जबरदस्त, जबरदस्त मदद की है। मैं अपने उद्देश्यों के लिए इतनी दूर तक जाऊँगा, हिब्रू पाठ के प्रयोजनों के लिए, मैं इतनी दूर तक कहूँगा कि मृत सागर स्कॉल के अलावा, हमारी बाइबिल को समझने के लिए, मैं कहूँगा कि उगारिट सबसे महत्वपूर्ण टैबलेट खोज है और दूसरे कारण से, न केवल हिब्रू से, बल्कि इसलिए कि कनानी धर्म के परिणाम के बारे में हम जो कुछ भी जानते हैं, वह उगारिट से जानते हैं।

जब आप अपना पुराना नियम पढ़ते हैं, तो आपके सामने एक स्पष्ट तस्वीर होती है कि कनानी धर्म एक भयानक चीज़ थी। लेकिन पुराना नियम आपको यह बताने के बारे में बहुत स्पष्ट नहीं है कि वे क्या मानते थे। अब, कुछ चीजें हैं जो उन्होंने कीं जो बहुत भयानक हैं, जैसे बच्चों की बलि देना और इस तरह की चीजें।

लेकिन हम वास्तव में पुराने नियम के कनानी धर्मशास्त्र के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं। हम बस इतना जानते हैं कि यह पापपूर्ण था। जैसे ही हम उगारिटिक पहुँचते हैं, हमें पता चलता है कि इसके विपरीत, अब हम जानते हैं कि कौन सा धर्मशास्त्र कनानी धार्मिक विचारों की विशेषता बताता है।

हम जानते हैं कि यह काफी हद तक मौसम और प्रजनन क्षमता से जुड़ा था, लेकिन कनानी धर्मशास्त्र के बारे में हम जो कुछ भी जानते हैं वह उगारिट से आता है। तो, मैं आपको जो सुझाव दूँगा वह यह है कि यदि आप किसी दिन निर्णय लेते हैं, कि आप एक बाइबिल विद्वान बनने जा रहे हैं, तो आप अपने प्रशिक्षण में उगारिटिक का कार्यसाधक ज्ञान विकसित करने के लिए जगह छोड़ दें। इसलिए मैं आपको यह कहकर छोड़ूँगा कि, निश्चित रूप से, त्रुटियों का पूरा शोर-शराबा इसलिए किया गया क्योंकि ये गोलियाँ इतनी शक्तिशाली और इतनी महत्वपूर्ण थीं कि हम एक ऐसे दौर में प्रवेश कर गए कि कुछ, मुझे नहीं लगता कि मैंने यह शब्द बनाया, हम इसमें प्रवेश कर गए पैन-उगारिटिज्म का काल।

दूसरे शब्दों में, यह ऐसा था मानो हमने उगारिटिक का विशेष चश्मा पहन लिया हो, और हमने उगारिटिक के प्रकाश में पूरा पुराना नियम पढ़ लिया हो। और इसका मतलब है कि बहुत सी चीजें थीं जो सही नहीं थीं, और मैं उनके बारे में बात नहीं करने जा रहा हूँ क्योंकि मुझे हमें अपने पाठ्यक्रम में आगे बढ़ाने की जरूरत है; हम आधे से थोड़ा अधिक रास्ते पर हैं, और हमें अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। तो, मैं आपको उगारिट के बारे में ये बातें बताने जा रहा हूँ और फिर उस साइट को छोड़ दूँगा।

उगारिट के बारे में सबसे आश्चर्यजनक चीजों में से एक, अजीब बात यह है कि इसे नष्ट कर दिया गया था। ओवन में ऐसी गोलियाँ पाई गईं जो अभी तक पकी भी नहीं थीं। और क्योंकि यह नष्ट हो

गया था और कभी भी इस पर दोबारा कब्ज़ा नहीं किया गया, तो उगारिट में सब कुछ यथास्थान यानी अपनी मूल सेटिंग में पाया गया।

यह आदर्श प्रकार की खोज है। जब आप इमारत के ऊपर इमारत पर इमारत बनाते हैं, तो इससे सबूत नष्ट हो जाते हैं, जबकि जब साइट नष्ट हो जाती है, तो आप कुछ चीजें खो देते हैं, लेकिन आप कई चीजें हासिल कर लेते हैं क्योंकि यह बाद की इमारतों द्वारा नष्ट नहीं होती है। तो, हम अपने टेप के शेष भाग में, इस टेप पर, अपना ध्यान कुछ महत्व के विषय क्षेत्र की ओर आकर्षित करने जा रहे हैं, जो कि इज़राइल में राजशाही का उदय है।

और इसलिए, मैं आरंभिक इज़राइल के बारे में बात करके शुरुआत करता हूँ। बहुत सारे इतिहास उपलब्ध हैं, और उनमें से कुछ सबसे अच्छे हैं लियोन वुड का इज़राइल के इतिहास का सर्वेक्षण, जॉन ब्राइट का इज़राइल का इतिहास, यूजीन मेरिल का किंगडम ऑफ़ प्रीस्ट्स। सच कहूँ तो, जब आपके पास ये तीनों हैं, तो आपके पास पर्याप्त चीजें हैं... आज कई नए इतिहास हैं जो अधिक अद्यतन हैं, लेकिन लड़के, मैं आपको बताता हूँ, उन तीन लोगों ने अपने इतिहास में बहुत अच्छा काम किया है, और यदि आपके पास वे तीन हैं, तो आप अच्छी स्थिति में हैं।

हम जजों के दौर के बारे में बात करना चाहते हैं। और फिर, हम इस पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करने जा रहे हैं, लेकिन पुरातत्व हमें न्यायाधीशों, न्यायाधीशों की लंबी अवधि से जो पता चलता है वह एक समय अवधि है जो मोटे तौर पर, बस आपको एक गोल आंकड़ा देने के लिए, लगभग 350 वर्ष है, केवल एक गोल आकृति देने के लिए। और जब आप जजेज पढ़ते हैं, तो यह एक निराशाजनक किताब होती है।

मुझे इस पुस्तक से प्रेम हो गया है, और इसलिए मेरे चर्च मंत्रालयों में, मुझे इस पुस्तक को पढ़ाना अच्छा लगता है। और मेरी पत्नी, आज हमारी 48वीं वर्षगांठ है। जब उसे पता चला कि मैं अपने चर्च में न्यायाधीशों को पढ़ा रहा हूँ, तो वह कहती, ओह, नहीं। यह बिल्कुल इस बारे में किताब नहीं है कि वे सूर्यास्त के समय कैसे चले गए और उसके बाद हमेशा खुशी से रहे।

यह एक निराशाजनक किताब है। सच तो यह है कि किताब में ऐसी बहुत कम कहानियाँ हैं जो खुशनुमा या तटस्थ भी हों। यह एक ऐसी किताब है जो हमें यह बताने के लिए बनाई गई है कि चीजें वास्तव में खराब हैं।

इस समयावधि में पुरातत्व के बारे में हम जो जानते हैं वह यह है कि यह हमें दिखाता है कि जिन लोगों को हम इज़राइल कहते हैं वे वास्तव में लोग नहीं थे। लोगों का सुझाव है कि वे एक समान जातीय पहचान साझा करते हैं और एक राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं। दोस्तों, हम न्यायाधीशों में जो देखते हैं, वह यह है कि वे एक राष्ट्र नहीं थे।

न्यायाधीशों की पुस्तक में केवल एक ही समय है जब इस्राएल के लोग पूरी तरह से एक साथ हो गए थे, और वह एक दूसरे को मारना था। पुस्तक की अंतिम कहानियों में से एक में, एक महान गृहयुद्ध होता है जिसमें 11 जनजातियाँ बेंजामिन की एक जनजाति से लड़ती हैं, और वे उसे

लगभग नष्ट कर देते हैं। और पूरी किताब में यह एकमात्र समय है जब जनजातियाँ सहयोग करती हैं।

और उस स्थिति में, एक दूसरे को मारने के लिए वे एक लोग नहीं थे, और वे एक राष्ट्र नहीं थे। वे जनजातियों का एक समूह थे, और जाहिर है, उनमें भारी मात्रा में धार्मिक धर्मत्याग था।

इसलिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुरातत्व हमें सिखाता है कि यह काल समृद्धि का समय नहीं था। ग्रामीण इलाकों में चीजें देहाती हैं, और कई बड़े शहर नहीं हैं।

वस्तुतः स्मारकीय संरचनाओं के रास्ते में कुछ भी नहीं है। और यह एक समय अवधि है, जो स्पष्ट रूप से, ऐसा लगता है जैसे यह सिर्फ कृषि नहीं थी, बल्कि यह अपेक्षाकृत गरीब थी। इसलिए, हमारे लिए यह याद रखना अच्छा होगा कि जजेज सी पीपल्स मूवमेंट से जुड़े हुए हैं।

सी पीपल्स मूवमेंट मोटे तौर पर जजों की किताब के बीच में होता है, और हम सोचते हैं कि सी पीपल्स मूवमेंट में क्या हुआ, जैसे कि वे जनजातियाँ तट के नीचे अपना रास्ता बना रही थीं, बहुत सारे शहरों पर कब्जा कर लिया गया और कुछ को नष्ट कर दिया गया। ऐसा लगता है कि इसने उस अराजकता का एक हिस्सा पैदा कर दिया है जिसे हम न्यायाधीशों की किताब में देखते हैं, उस तरह की राजनीतिक अराजकता जब वहां बहुत कम या कोई राजनीतिक व्यवस्था नहीं होती है। मिस्रियों ने सिरो-फिलिस्तीन पर नियंत्रण खो दिया है।

तो, न्यायाधीशों में अराजकता संभवतः सी पीपल्स मूवमेंट की अराजकता से कुछ अचूक तरीकों से जुड़ी हुई है। संयुक्त राजशाही की अगली अवधि के साथ निरंतरता के एक अंतिम बिंदु पर बात करने की आवश्यकता है। न्यायाधीश इस अवधि के लिए एक दुर्भाग्यपूर्ण शब्द है, क्योंकि यह वास्तव में पुस्तक की विशेषता नहीं बताता है।

आइए मैं आपको इब्रानियों की अजीब संस्कृति के बारे में कुछ बताऊं। पुराने नियम की पुस्तकों के लिए आपके बाइबिल में जो नाम हैं, उनमें से कई नाम हिब्रू परंपरा की इन पुस्तकों के नाम नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, हमें न्यायाधीशों का नाम न्यायाधीशों की पुस्तक से नहीं, बल्कि पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद सेप्टुआजेंट से मिलता है।

चूँकि इसमें लोगों द्वारा निर्णय लेने की बात कही गई है, सेप्टुआजेंट के लेखकों ने, स्वाभाविक रूप से, पुस्तक का नाम जजेज रखा है। लेकिन हिब्रू बाइबिल और प्राचीन मेसोपोटामिया दुनिया दोनों में पुस्तक के पहले कुछ शब्दों को शीर्षक बनाना आम परंपरा थी। तो न्यायाधीशों की पुस्तक का शीर्षक वास्तव में न्यायाधीश नहीं है, बल्कि "यह यहोशू की मृत्यु के बाद आया।"

तो, हमारी पुस्तक का वास्तविक शीर्षक है "यह जोशुआ की मृत्यु के बाद आया।" और, निस्संदेह, अधिकांश पाठक जानते हैं कि जब यहोशू की मृत्यु हुई, तो यह अच्छा नहीं था। जबकि बाइबिल का पाठ हमें यह बताने के लिए बहुत कष्ट उठाता है कि कैसे भगवान ने यहोशू को मूसा का अनुसरण करने के लिए खड़ा किया, कैसे भगवान ने मूसा पर मौजूद आत्मा को लिया और उस आत्मा को यहोशू पर डाल दिया, और कैसे यहोशू मूसा का सटीक विस्तार था क्योंकि जब

आप यहोशू को पढ़ते हैं अध्याय 1, जोशुआ को बार-बार कानून का पालन करने के बारे में बताया गया है जिसके माध्यम से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

खैर, मूसा के साथ भी यही बात है। लेकिन जब यहोशू मर जाता है, तो गुप्त रूप से, आश्चर्यजनक रूप से, कोई नेता नहीं होता है। और पाठ हमें यह नहीं बताता कि ऐसा क्यों है।

यदि ईश्वर ने यहोशू को खड़ा करने के लिए कष्ट उठाया, तो हम खुद से पूछ सकते हैं, उसने यहोशू का उत्तराधिकारी क्यों नहीं खड़ा किया? खैर, पाठ हमें नहीं बताता। मैं आपकी ओर से एक अनुमान लगाता हूँ और कहता हूँ, मित्रों, जब आप बाइबल में मूसा के विषय में वृत्तान्त पढ़ते हैं और यहोशू के विषय में वृत्तान्त पढ़ते हैं, तो इस्राएलियों ने उनमें से किसी का भी अनुसरण नहीं किया। कई अवसरों पर, मूसा को ईश्वर से हस्तक्षेप करने के लिए कहना पड़ा क्योंकि इस्राएली उसे मारने जा रहे थे।

वे परमेश्वर से बहुत दूर चले गए हैं। और जब हम यहोशू की किताब तक पहुंचते हैं, जैसे-जैसे हम यहोशू के अंत की ओर पहुंचते हैं, मुझे लगता है कि यह अध्याय 13 में है, अगर मेरी स्मृति आज काम कर रही है। अध्याय 13 में, यहोशू इस्राएलियों की ओर देखता है और कहता है, तुम लोग वहाँ कब तक रहोगे? क्योंकि वे जॉर्डन नदी के पूर्वी किनारे पर हैं।

और यहोशू कह रहा है, इधर आओ और मेरे पीछे आओ। आइए ज़मीन पर कब्ज़ा करें। और जब तक हम यहोशू की किताब के अंत तक पहुँचते हैं, यह हमें सीधे तौर पर बताती है कि हालाँकि कुछ ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया गया है, लेकिन ज्यादातर ज़मीन पर कब्ज़ा नहीं किया गया है।

इसलिए, जैसा कि मैं हमें इस बात के लिए तैयार करता हूँ कि हम हिब्रू बाइबिल में इतिहास के प्रवाह में कहां जा रहे हैं, मैं यह बात कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि शायद भगवान ने यहोशू के उत्तराधिकारी को नहीं खड़ा किया क्योंकि वे लोगों का अनुसरण नहीं करेंगे। जिसे परमेश्वर ने पहले ही ऊपर उठा लिया था। उन्होंने मूसा का इस हद तक पीछा नहीं किया कि मुट्ठी भर को छोड़कर सभी को रेगिस्तान में दफना दिया गया। उन्होंने यहोशू का अनुसरण नहीं किया क्योंकि जब आप यहोशू अध्याय 1 पढ़ते हैं, तो यह आपको प्रत्येक मामले में बताता है, कोई भी जनजाति उस भूमि को जीतने में सफल नहीं हुई जो उसे दी गई थी।

तो शायद इसका एक कारण यह है कि परमेश्वर ने किसी नेता को खड़ा नहीं किया क्योंकि वह उन्हें तैयार कर रहा था कि वे अंततः उस नेता को स्वीकार करने के लिए तैयार हों जिसे परमेश्वर खड़ा करेगा। खैर, उस सब के लिए इतना ही। आइए यहां बीच में मेरी टिप्पणियों पर नजर डालें।

निम्नलिखित अवधि के साथ निरंतरता का एक अंतिम बिंदु यह है कि न्यायाधीश बहुत अच्छा शब्द नहीं है, क्योंकि न्यायाधीशों की पुस्तक में, किसी भी न्यायाधीश को कभी भी न्यायाधीश नहीं कहा जाता है। यदि उन्हें न्यायाधीश नहीं कहा जाता है, तो आप पूछ सकते हैं कि फिर हम इस पुस्तक को न्यायाधीश क्यों कह रहे हैं? खैर, ऐसा इसलिए है क्योंकि कहा जाता है कि उनमें से आधे ने क्रिया रूप का निर्णय किया है। किसी भी जज को कभी भी जज की उपाधि नहीं दी जाती।

दूसरे, यहां तक कि जज्ड क्रिया रूप का प्रयोग इसके सभी नेताओं के लिए भी नहीं किया जाता है। यहाँ तक कि इसके सभी नेताओं के लिए क्रिया रूप का भी प्रयोग नहीं किया जाता है। तो, वास्तव में, मैं यह कहना चाहूँगा कि वास्तव में न्यायाधीश नामक कोई सुसंगत कार्यालय नहीं था।

वास्तव में, मुझे लगता है कि न्यायाधीशों की पुस्तक में जो कुछ हो रहा है वह कुछ हद तक महत्वपूर्ण है। ऐसा लगता है कि एक जनजाति के अलावा किसी अन्य चीज़ को चलाने के लिए प्रशासनिक मशीनरी गायब है। तो, मैं आपको जो सुझाव दूँगा वह कुछ इस तरह है।

न्यायाधीशों की पुस्तक जो प्रकट कर रही है वह एक राष्ट्र नहीं है, एक लोग नहीं हैं, बल्कि विभिन्न जनजातियों की व्यक्तिगत गतिविधियाँ हैं। और कभी-कभी जनजातियाँ किसी ऐसे व्यक्ति का सहयोग करने और उसका अनुसरण करने के लिए सहमत होती थीं जिसे हम न्यायाधीश कहते हैं, और कभी-कभी वे ऐसा नहीं करते थे। लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि एक न्यायाधीश का कार्यालय था जो वास्तव में देश पर शासन करता था।

इसके बजाय, मुझे संदेह है कि जिस तरह से इज़राइल पर शासन किया जा रहा था वह न्यायाधीश कहे जाने वाले किसी व्यक्ति के कार्यालय द्वारा नहीं था। इज़राइल पर कबीलाई बुजुर्गों का शासन था। पुस्तक वास्तव में जनजातीयवाद के बारे में है।

यदि आप नोट्स नहीं ले रहे हैं, तो मैं आपको इसे लिखने के लिए प्रोत्साहित करूँगा क्योंकि यही चल रहा है। तथाकथित लोगों में कोई सामंजस्य नहीं है। यह 12 अलग-अलग जनजातियों का एक संग्रह है जिनमें एक-दूसरे के प्रति परस्पर घृणा, ईर्ष्या और ईश्वर के लोगों के रूप में सहयोग करने और एक साथ जुड़ने की अनिच्छा है।

इसलिए, जैसा कि हम तथाकथित न्यायाधीशों को देखते हैं, यह कोई संयोग नहीं है कि 12 हैं। यह संभवतः 12 जनजातियों के कारण विशेष रूप से चुनी गई संख्या है। छह प्रमुख न्यायाधीश और छह छोटे न्यायाधीश होते हैं।

और उन न्यायाधीशों, उन तथाकथित न्यायाधीशों का विश्लेषण, जैसा कि मैंने आपको बताया था, उनमें से किसी को भी कभी भी न्यायाधीश नहीं कहा जाता है, यह दर्शाता है कि प्रत्येक न्यायाधीश में केवल एक ही समानता थी कि वे नेता थे। प्रत्येक न्यायाधीश एक नेता था। उनमें बस इतनी ही समानता थी।

एक न्यायाधीश से दूसरे न्यायाधीश तक कोई निरंतरता नहीं थी, जैसा कि अगर यह एक कार्यालय होता तो हम उम्मीद करते। ठीक है, तो शायद मैं अभी इस अर्थ में बाल बाँट रहा हूँ कि मैं आपसे एक राजनीतिक कार्यालय की अवधारणा के बारे में बात कर रहा हूँ, और मैं आपसे कह रहा हूँ कि इस बात के बहुत कम सबूत हैं कि किसी व्यक्ति का राजनीतिक कार्यालय था जिसे जज कहा जा सके। इनमें से प्रत्येक राजनीतिक हस्ती ने नेतृत्व करते समय जो किया वह यह था कि उन्होंने उन्हें उनके शत्रुओं से बचाया।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंतर है क्योंकि हम इस समय अवधि को देख रहे हैं। इसलिए, चौथे, जोर नेता की गतिविधि पर दिया जाना चाहिए, न कि किसी ऐसे पद पर

जो पौराणिक हो। ठीक है, अब जब मैं बच्चा था तो यह कहावत हुआ करती थी कि मेरे पास तलने के लिए अन्य मछलियाँ हैं।

मुझे जो मिल रहा है वह वही है जो मुझे लगता है कि बाइबिल के अध्ययन में एक वास्तविक समस्या है, और यह विरोधाभास है जो कथित तौर पर न्यायाधीशों के बीच होता है क्योंकि न्यायाधीशों को धर्मतंत्र और राजात्व के बराबर माना जाता है, जो राजतंत्र के बराबर होता है। और इसलिए, मैं यह बहुत सुनता हूँ और वे जिस बारे में बात करते हैं वह यह है कि न्यायाधीशों की पुस्तक में हमारे पास एक ऐसा काल है जो धर्मतंत्र है लेकिन राजतंत्र नहीं है क्योंकि धर्मतंत्र में केवल ईश्वर ही राजा है। और मैं स्पष्ट रूप से उस मॉडल को अस्वीकार करने के लिए मंच तैयार करने का प्रयास कर रहा हूँ।

तो, सबसे पहले, जैसा कि मैं देखता हूँ कि न्यायाधीशों में क्या चल रहा है, यह हमारे राजतंत्र से अधिक कोई धर्मतंत्र नहीं है। ईश्वर सदैव शासन करता है। न्यायाधीश क्या कर रहे हैं, मेरे फैसले में, यह आंशिक रूप से इसका केवल एक हिस्सा है, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। न्यायाधीश दिखा रहे हैं, ठीक है, यह विवादास्पद है, इसलिए हर कोई मुझसे सहमत नहीं होगा, न्यायाधीश दिखा रहे हैं कि क्या होता है जब आप उन नेताओं का पालन करने के लिए तैयार नहीं होते जिन्हें भगवान खड़ा करते हैं।

मुझे लगता है कि यह न्यायाधीशों की पुस्तक में तीन या चार अवसरों पर है जिसमें पाठ कहता है, उन दिनों, इज़राइल में कोई राजा नहीं था; हर किसी ने वही किया जो उनकी नज़र में सही था। यह अच्छी बात नहीं है। जब हर कोई वही करता है जो उसकी नज़र में सही है, तो इससे अराजकता पैदा होती है, जो कि न्यायाधीशों की पुस्तक वास्तव में हमें दिखाने के लिए बनाई गई है।

यह हमें त्रासदी, धार्मिक धर्मत्याग और राष्ट्रीय विघटन की समय अवधि दिखाता है। तो, मैं आपको जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि, कुछ लेखकों के विपरीत, जज कोई आदर्श समय नहीं है, यह बड़ी त्रासदी का समय है। ठीक है? इसलिए, मैं उस अवधारणा को अस्वीकार कर रहा हूँ जो कहती है कि जिसे हम न्यायाधीशों की अवधि कहते हैं, लगभग 300 से अधिक वर्ष, कोई अद्वितीय धर्मतंत्र नहीं है क्योंकि ईश्वर अभी भी न्यायाधीशों में इज़राइल पर शासन कर रहा है, जिस तरह से वह मूसा के अधीन इज़राइल पर शासन कर रहा था, और जिस तरह से वह दाऊद के अधीन इस्राएल पर शासन करेगा, और जिस प्रकार वह हिजकिय्याह के अधीन इस्राएल पर शासन करेगा।

ईश्वर इज़राइल का स्थायी राजा है, ईश्वर दुनिया का स्थायी राजा है, और मैं इस अवधारणा को खारिज कर रहा हूँ कि न्यायाधीश एक धर्मतंत्र है जैसे कि यह अद्वितीय है। तो, जैसे ही मैं बात समझाने की कोशिश करता हूँ, मुझे जल्दी से हमारे लिए मंच तैयार करने दीजिए। धर्मतंत्र शब्द एक ऐसा शब्द है जो बाइबिल का शब्द नहीं है।

जब मैं कहता हूँ कि यह बाइबिल आधारित शब्द नहीं है, तो मेरा मतलब यह नहीं है कि यह विचार बाइबिल आधारित नहीं है, बल्कि यह है कि यह शब्द बाइबिल में कभी नहीं आता है।

थियोक्रेसी ग्रीक भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। यह ग्रीक शब्द थियोस से आया है, जिसका अर्थ है ईश्वर और आर्कोस, या आर्कोटोस, शासक।

तो, व्युत्पत्तिशास्त्र की दृष्टि से धर्मतन्त्र का अर्थ ईश्वर का शासन है। खैर, यह मेरी बात है। ईश्वर सदैव शासन करता है।

ऐसा कोई काल नहीं है जब यह धर्मतन्त्र न हो। अमेरिकी जो सोच सकते हैं उसके विपरीत, ईश्वर अभी भी दुनिया का राजा है। यह इस अर्थ में धर्मतंत्र है कि ईश्वर अभी भी दुनिया पर शासन कर रहा है।

अब, अमेरिका कोई धर्मतंत्र नहीं है, बल्कि ईश्वर आज तक शासन कर रहा है। तो, हम इस अवधि को धर्मतंत्र कैसे कहने लगे? खैर, अपने नोट्स में, मैंने पृष्ठ के मध्य में जोसीफस का उल्लेख किया है। जोसेफस, मैंने आपको पहले हमारे टेप में बताया था कि जोसेफस एक जनरल था जिसने रोम के खिलाफ विद्रोह में भाग लिया था।

और, निःसंदेह, वह हार गया था, और केवल उसकी अपनी चतुराई से जोसीफस की जान बच गई थी। उसने खुद को बचाया क्योंकि उसने रोमनों को आश्चस्त किया कि वह एक दिव्य भविष्यवक्ता था। और रोमन लोग हमेशा भविष्य में रुचि रखते थे, लोगों को ऐसा यकीन है।

वह हमेशा भविष्य में रुचि रखता था, इसलिए उसने उन्हें आश्चस्त किया कि वह अपने साथ रखने लायक है। अपनी जान बचाने के बाद, जोसेफस ने एक तरह से बदलाव किया और वह रोम का बहुत बड़ा प्रशंसक बन गया। इसलिए, जोसेफस ने कई खंड लिखे, यहूदियों के युद्ध और यहूदियों का इतिहास।

और अपनी पुस्तक में, जब वह यहूदियों का इतिहास लिख रहा था, जब वह इतिहास में न्यायाधीशों के बारे में अनुभाग लिखने आया, तो उसके मन में यह विचार आया कि यह एक आदर्श समय था। अब, उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि जोसीफस ने इज़राइल की परेशानियों के लिए उसके नेतृत्व को दोषी ठहराया था। उन्होंने इज़राइल के राजाओं, विशेष रूप से हेरोडियन राजाओं को इस कारण के रूप में देखा कि इज़राइल को इतने कठिन समय का सामना करना पड़ा।

उन्हें यह विचार आया कि राजसत्ता की कमी ही सफलता का रहस्य है, और इसलिए उन्होंने न्यायाधीशों की पुस्तक को आश्चर्यजनक रूप से, किसी तरह एक आदर्श काल के रूप में देखा। यह आदर्श था क्योंकि वहां कोई राजा नहीं था; यह एक धर्मतंत्र था, और उनके लिए, यही वह मॉडल था जिसे उन्होंने प्रस्तुत किया था। खैर, वह मॉडल जिसमें न्यायाधीश एक धर्मतंत्र थे, और राजशाही की अवधि किसी तरह एक बुरा विचार थी, उस मॉडल ने वास्तव में जड़ें जमा लीं और आज तक हमारे साथ चिपकी हुई हैं।

इसलिए, मैं आपको यह कहकर उस मॉडल पर अपवाद रखना चाहूंगा कि जज न तो शांति का काल है और न ही आदर्श का। यह इस अर्थ में धर्मतंत्र का काल नहीं है कि यह राजतंत्र के विपरीत है। न्यायाधीश प्रथम क्रम की अराजकता का कालखंड है।

मैंने इसे आपके लिए एक सरल छोटे शब्द अध्ययन में प्रदर्शित किया। यदि हम इन शब्दों को देखें, तो हम देख सकते हैं कि न्यायाधीशों की पुस्तक में, जो शब्द एक्सोडस, लेविटस, नंबरर्स, ड्यूटेरोनॉमी और जोशुआ पर हावी था, वह शब्द टोरा है, टोरा कानून के लिए हिब्रू शब्द है। न्यायाधीशों की पूरी किताब में, टोरा शब्द एक बार भी नहीं आता है।

मूसा को पैगम्बर कहा जाता है। हमारे पास यहोशू में भविष्यवाणी की गतिविधि है, लेकिन न्यायाधीशों की पूरी किताब में, भविष्यवक्ता शब्द केवल एक बार आता है। हमारे पास एक्सोडस और नंबरर्स में भविष्यवक्ताएं हैं, लेकिन जजेज में, एक भविष्यवक्ता केवल एक बार दिखाई देती है, दबोरा।

यदि आप व्यवस्थाविवरण अध्याय 16 से 18 तक वापस जाएं, तो पुजारी इज़राइल के संविधान में शासी अधिकारियों में से एक है, लेकिन जोशुआ की पूरी किताब में, एकमात्र पुजारी जिसका उल्लेख अध्याय 17 से 18 में एक पुजारी है, और वह भ्रष्ट है। जब हम निर्गमन की पुस्तक पढ़ते हैं, तो निर्गमन का अंतिम तीसरा भाग तम्बू के निर्माण और तम्बू के अधिकारियों का वर्णन करता है। वास्तव में, निर्गमन में, तम्बू इतना पवित्र है कि तम्बू के पूरा होने के अंत में, पाठ हमें बताता है कि भगवान नीचे आए और तम्बू में निवास किया।

खैर, दिलचस्प बात यह है कि न्यायाधीशों की पुस्तक में टेबरनेकल शब्द एक बार भी नहीं आया है। जब हम निर्गमन और लैविकस और व्यवस्थाविवरण में पढ़ते हैं, तो इज़राइल की धार्मिक प्रणाली तीन पवित्र दिन की घटनाओं, तीर्थयात्रा घटनाओं के आसपास बनाई गई है, जिसमें इज़राइल को यरूशलेम आना होता है या किसी केंद्रीय स्थान पर आना होता है, और वे खुद को इज़राइल के भगवान के सामने प्रस्तुत करते हैं। खैर, जजों की पूरी किताब में दावत या पवित्र दिन शब्द एक बार भी नहीं आया है।

जब हम एक्सोडस और लेविटिकस पढ़ते हैं, तो हम बार-बार परमपवित्र स्थान, परमेश्वर के निवास स्थान, सन्दूक के बारे में पढ़ते हैं। जब हम न्यायाधीशों की पुस्तक पर पहुँचते हैं, तो एक बार भी सन्दूक शब्द प्रकट नहीं होता है। जब हम पुराने नियम के धार्मिक केंद्रबिंदु शब्दों को लेते हैं, तो ग्रेस, हेसेड और हेन दोनों हिब्रू शब्द हैं जिनका अनुवाद मुख्य रूप से ग्रेस या ग्रेस शब्द के कुछ रूप के रूप में किया जाता है।

हेस्ड या हेन शब्द पूरी किताब के केवल अध्याय एक और अध्याय आठ में दिखाई देता है, इसलिए जब आप यह सारी जानकारी एक साथ रखते हैं, तो यह आपको बता रहा है कि न्यायाधीशों की पूरी अवधि भयानक धर्मत्याग, गैर-मानक धार्मिक अनुभव है। और संक्षेप में, न्यायाधीश जो हमें बता रहे हैं वह धर्मतंत्र का कोई आदर्श काल नहीं है, बल्कि एक ऐसा शब्द है जिस पर मैं व्यक्तिगत रूप से जोर दूंगा। यह धर्मतंत्र नहीं है, और यह निश्चित रूप से राजतंत्र नहीं है, लेकिन यह अराजकता का काल है।

कोई नियम नहीं है। यह अल्फ़ा प्राइवेट है। यह गैर-नेतृत्व है।

यह एक समय अवधि है जिसमें बाइबिल का पाठ हमें बता रहा है कि अराजकता, धर्मत्याग है, सब कुछ अपनी सही श्रेणी से बाहर है। इसे ही एक विद्वान ने WUD, WUD, वर्ल्ड अपसाइड डाउन कहा है। तो न्यायाधीश जो कर रहे हैं, मेरे अनुभव में, मेरे मूल्यांकन में, क्या यह कुछ इस तरह है।

यहां हमारे पास ऐसे लोगों का शाही नेतृत्व है जिन्हें मैं राजा कहूंगा - बेशक मूसा और जोशुआ - लेकिन आप इससे असहमत होने के लिए स्वतंत्र हैं।

और यहाँ पर, हमारे पास वे राजा हैं जो 1 शमूएल 8 से शुरू होते हैं। और न्यायाधीश, इसके मूल में, एक दीर्घवृत्त है। जिस तरह से चीजें होनी चाहिए, उसके बीच यह इतिहास का एक कालखंड है। यह महासंकट और अराजकता का समय है।

और, निस्संदेह, यह एक समय अवधि भी है जिसमें उनके दुश्मन प्रभारी होते हैं। लेकिन मेरे साथ ध्यान दें कि दुश्मन महान नहीं हैं। ऐसा नहीं है कि मिस्रवासी दरवाज़ा खटखटा रहे हैं।

ऐसा नहीं है कि असीरियन उन्हें आतंकित करने के लिए वहां आये हैं। वास्तव में, न्यायाधीशों की पुस्तक में उनके सभी शत्रु स्थानीय हैं। अम्मोनी, मोआबी और पलिश्टी सभी छोटे राज्य हैं जो वास्तव में इज़राइल को हरा सकते हैं क्योंकि इज़राइल एकजुट नहीं है।

ठीक है, मेरे विचार से यह महत्वपूर्ण है कि आप स्वयं अध्ययन करके देखें कि क्या आप इस विचार को अपनाना चाहते हैं। मैं जो देख रहा हूँ वह यह है कि यह एक ऐसा समय है जिसमें भगवान चीजों को दिव्य इच्छा की ओर ले जा रहे हैं। यह वह अवधि है जिसमें ईश्वर चीज़ों को ईश्वरीय इच्छा की ओर ले जाना जारी रखता है।

बीच की यह अवधि एक ऐसी अवधि है जिसमें इस पुस्तक की संपूर्णता में दैवीय इच्छा की उपेक्षा, अवज्ञा और दुरुपयोग किया गया है। खैर, अब, आप शायद मुझसे कहना चाहेंगे, ठीक है, यदि यह पूर्ण अवज्ञा की समयावधि है, तो पुस्तक का धर्मशास्त्र क्या होगा? और यदि मैं आपसे यह कहूँ, तो मेरा उत्तर होगा कि यह पुस्तक जो कर रही है वह मूसा के माध्यम से बनाई गई वाचा के प्रति परमेश्वर की प्रतिबद्धता को दर्शा रही है। यह पुस्तक हमें जो दिखा रही है वह ईश्वर की अद्भुत कृपा है।

जबकि ईश्वर उन्हें उनकी अवज्ञा और उनके धर्मत्याग के लिए हर मामले में दंडित करता है, पुस्तक हमें जो दिखा रही है वह यह है कि ईश्वर उन्हें उस स्थान पर ले जाने के लिए दृढ़ रहेगा जहां ईश्वर उनके लिए अपनी इच्छा पूरी कर सकता है। यह एक अजीब बात है कि किसी पुस्तक में अनुग्रह शब्द मुश्किल से ही आता है, लेकिन मुझे लगता है कि प्रत्येक कहानी एक अनुग्रह कहानी है। प्रत्येक मामले में, परमेश्वर अपने अनुबंधित लोगों के साथ अपने रिश्ते को बचाता है।

तो, यहां वह अनुक्रम है जो इसकी सभी छह प्रमुख कहानियों में अपना स्थान बनाता है। इस्राएली धर्मत्याग करते हैं। वे पाप करते हैं।

परमेश्वर अत्याचारी को खड़ा करता है। जनता चिल्लाती है। परमेश्वर एक उद्धारकर्ता को खड़ा करता है।

यह पुस्तक के प्रत्येक चक्र में पाया जाता है। लोग पाप करते हैं। परमेश्वर अत्याचारी को खड़ा करता है।

लोग दर्द से कराहते हैं। परमेश्वर एक उद्धारकर्ता को खड़ा करता है। और यहाँ वह है जो किताब में कभी नहीं होता।

एक बार नहीं। लोग पश्चाताप करते हैं। तो हम जो देखते हैं वह यह है कि भगवान की उनके साथ निरंतर भागीदारी के बावजूद, लोग कभी पश्चाताप नहीं करते हैं।

और इसलिए, 300 से अधिक वर्षों तक, हम कहीं भी पहुँचते नहीं दिख रहे हैं। मेरे सोचने के तरीके के अनुसार, इस अवधि का उद्देश्य इस्राएलियों को इस बात के लिए तैयार करना है कि ईश्वर उन्हें कहाँ ले जाना चाहता है। यहाँ पर, सभी इस्राएली जंगल में मर गये।

ठीक है, वे यहाँ जंगल में नहीं हैं, लेकिन वे सभी परमेश्वर के वादों को पूरा किए बिना मरने वाले हैं। तो, यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि मेरा मानना है कि भगवान ने इस समय अवधि का उपयोग उन्हें वहाँ पहुँचाने के लिए किया है जहाँ भगवान जाना चाहते हैं, जो कि उन्हें डेविड जैसे धर्मनिष्ठ राजाओं और शायद कुछ हद तक सुलैमान जैसे धर्मनिष्ठ राजाओं से परिचित कराना है। तो, इसे ध्यान में रखते हुए, मैंने आपको आने वाली महान घटना के लिए तैयार करने की कोशिश की है, जो कि राजशाही का गठन है।

और हमारे अगले टेप में, हम इसी से शुरुआत करेंगे, राजशाही का गठन और यह सब कैसे पृष्ठभूमि में फिट बैठता है और भगवान क्या कर रहा है। तो, हम वहीं रुकेंगे और फिर वापस आएंगे, या फिर फिर से शुरू करेंगे। मेरा वापस आना हो रहा है; आप अभी शुरुआत कर रहे हैं, और हम राजशाही के गठन को देखेंगे।

ठीक है, आपका ध्यान देने के लिए धन्यवाद।

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 15 है, लोग समूह, फ़िलिस्तीन और उगारिट, राजशाही का उदय।